उपाध्यक्ष महोदय : वह हम अगली दफ़ा लेंगे। सोमवार को उसको आपसे सुनेंगे। अब हम दूसरा डिस्कशन लेते है।

14.31 hrs.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

FORTY-THIRD REPORT

Shri Jhulan Sinha (Siwan): Sir, I beg to move:

"That this House agrees with the Forty-third Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 22nd April, 1959"

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That this House agrees with the Forty-third Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 22nd April, 1959"

Those in favour may kindly say 'Aye'.

श्री भक्त दर्शन (गढ़वाल) : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन यह है कि श्री फ्रैंक एन्थनी के प्रस्ताव पर जो ३ घंटे का समय रखा गया है उसको बढा कर कम से कम ४, ५ घंटे कर दिया जाय क्योंकि उस पर बहुत से लोग बोलना चाहेंगे।

श्री वाजपेयी (बलरामपुर) मै समझता हूं कि चूंकि संसद् के वर्तमान सत्र में संसद् की राजभाषा समिति द्वारा भाषा सम्बन्धी रिपोर्ट पर शायद विचार न हो सकेगा और सभी सदस्य इस प्रस्ताव पर बोलना चाहेंगे तो इस रेजोलूशन के समय में कुछ वृद्धि कर देनी चाहिये।

श्री नरदेव स्नातक (अलीगढ़—रक्षित—अनुसूचित जातियां) इस पर समय जरूर बढ़ना चाहिये।

उपाध्यक्ष महोदय : ४ घंटे मैक्सिमम समय है जोकि रूल्स में प्रोवाइडेड है और उससे ज्यादा समय नही दिया जा सकता जब तक कि हम रूल्स को न बदलें या उनको सस्पेंड न करे।

पंडित ब्रज नारायण "ब्रजेश" (शिवपुरी) जितनी भी कृपा कर सकते हों कर दी जाय।

उपाध्यक्ष महोदय : इस रेजोलूशन पर ३ घंटे दे दिये गये हैं। लेकिन इसमें एक चीज यह है कि जिन का रेजोलूशन इससे आगे होगा उनको अगर अपना रेजोलूशन मूव करने का वक्त नही मिलेगा और चूंकि सेशन खत्म हो रहा है इसलिए उनका रेजोलूशन जाता रहेगा और फिर अगले सेशन में उसके लिए नया नोटिस देना पडेगा लेकिन अगर वह मान जायं और आध ही घंटा लें तो मुझे कोई ऐतराज नही होगा। वैसे चेअरमैन को २०, २५ मिनट तक टाईम एक्सटेंड करने का अधिकार है और वह ऐसा कर सकते है इसलिए इसको ऐसे ही रहने दिया जाय।

श्री नरदेव स्नातक : समय एक घटा ज्यादा बढा दिया जाय।

उपाध्यक्ष महोदय : आपने मुझे ठीक से सुना नही वरना आप शायद यह न कहते।

The question is:

"That this House agrees with the Forty-third Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 22nd April, 1959."

The motion was adopted

14.33 hrs.

RESOLUTION *RE.* EXPORT OF MONKEYS—*contd.*

Mr. Deputy-Speaker: The House will now resume further discussion of the Resolution moved by Shri Mohan Swarup on the 11th April, 1959 regarding Export of Monkeys.

Out of 2 hours allotted for the discussion of the Resolution 34 minutes

have already been taken up and 1 hour and 26 minutes are left for its further discussion today.

Shri Ranbir Singh Chaudhuri may continue his speech.

चौ० रणबीर सिंह (रोहतक) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रस्ताव का विरोध कर रहा था। अगर श्री मोहन स्वरूप की प्रस्ताव को लाने से यही मंशा थी कि उनको जब हिन्दुस्तान से बाहर भेजा जाता है या रास्ते में बंदरों को जो तकलीफ़ होती है उस तकलीफ़ से बचाया जाय तो मैं समझता हूं कि उनकी बात के अन्दर कुछ वज़न है। इसके अलावा जो कुछ कम्पनियां फ़ायदा उठाती है और १०, १५ रुपये में एक बंदर खरीद कर उसको १०० रुपये में बेचती है, अगर इस मुनाफ़े के खिलाफ़ आवाज उठाना उनकी मंशा थी तो मैं उनसे सहमत हो सकता हूं लेकिन अगर उनकी मंशा यह है कि इस देश के अन्दर अधिक से अधिक बंदरों की पैदावार की जाय और उनको पनपने दिया जाय तो मैं उनसे इसमें सहमत नहीं हो सकता।

(सदन में हंसी)

श्री मोहन स्वरूप चूंकि एक काश्तकार के घर में पैदा हुए है तो मुझे तो यह देख कर हैरानी होती है कि उन्हें बंदरो के साथ इतनी हमदर्दी कैसे आ गई .....

श्री डी० चं० शर्मा : (गुरदासपुर) अजी वह दयावान किसान है।

उपाध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर।

चौ० रणबीर सिंह : मैं तो समझता हू कि जिस आदमी ने अपनी फ़सल को बंदरों द्वारा खराब करते देखा होगा उसके दिल में कभी भी बंदरों के लिए प्रेम और हमदर्दी की भावना पैदा नहीं हो सकती चाहे वह कितना ही अहिंसावादी क्यों न हो।

मैं मानता हूं कि इस देश के अन्दर महात्मा बुद्ध पैदा हुए, इस देश के अन्दर महात्मा गांधी हुए और इस देश ने राष्ट्रपिता के बतलाये हुए रास्ते पर चल कर बग़ैर कोई लड़ाई अथवा हिंसा करे और खूनखराबी किये बग़ैर देश को आजादी प्राप्त कर ली और पिछले दस वर्षों में भी इस देश ने अहिंसात्मक मार्ग का अनुसरण करते हुए भूमि सुधार सम्बन्धी क्रान्ति कर डाली। जिस क्रान्ति को करने के लिए हमारे पड़ौसी देशों में लाखों आदमियों को मारा गया, उस क्रान्ति को इस देश ने अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करते हुए पूरा किया। इस देश के अन्दर जो बड़े बड़े कारखानेदार है उनका इंतजाम भी किसी डंडे या गोली से नहीं किया जाता है बल्कि बड़ी शान्ति से और समझा बुझा कर किया जाता है।

उपाध्यक्ष महोदय, अब बंदर अगर इस देश का नुकसान करते है तो उनका भी हमें इंतजाम करना होगा जिस तरह कि अगर कुछ भाई देश प्यार के नाम से अथवा लोगों के नामो की दुहाई दे करके इस देश का नुकसान करे तो उनका भी इंतजाम करना इस सदन का काम हो जाता है और उनका भी इंतजाम किया जाता है।

उपाध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर। आज जिस चीज के इंतजाम की फ़िक्र की जा रही है उसके ही इंतजाम के बारे में कहा जाय। बंदरो के बारे में ही आज आप कहिये।

चौ० रणबीर सिंह : चूकि यहा इस सदन में कहा गया था इसलिए मुझे यह कहना पड़ा कि अगर कुछ व्यक्ति देश का नुकसान करेंगे चाहे मंत्री ही क्यों न हो तो उनका भी इंतजाम किया जायगा। एक भाई ने कहा कि क्या उस हालत में उनको भी बाहर भेजा जायगा तो मैं यह बताना चाहता हूं कि यह मंत्री महोदयों का सवाल नहीं है बल्कि और भी दूसरे भाई है जो कभी किसान के नाम से तो कभी मजदूर के नाम से तो कभी हिन्दी के नाम से, पंजाबी के नाम से और कभी सूबे के नाम से इस देश का नुक़सान करना

[चौ० रणवीर सिंह]

चाहते है और उन नुकसान पहुंचाने वालों का भी हमें इंतजाम करना होगा ।

इस देश के अन्दर जब से हम आजाद हुए है सन् १९४६ से सन् १९५८ तक १४५६ करोड़ रुपये का अनाज हमें बाहर से मंगाना पड़ा और यही नहीं उस अनाज को गरीब आदमियों तक पहुचाने के लिए २६१ करोड रुपये की सहायता देनी पड़ी ताकि गरीब लोगों तक अनाज पहुंच सके और लोग भूख से न मरे ।

इस चीज के अन्दर केवल बंदरों की रक्षा की ही भावना नही है बल्कि इसके पीछे नाजायज फ़ायदा उठाने की बात है । मुझे यह चीज बड़े दुःख के साथ कहनी पड़ती है कि हमारे देश के अन्दर कुछ भाई ऐसे है जो कि इस देश के दबे हुए हरिजनो भूखे और नंगे किसानों के नाम पर नही अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए बड़ी-बड़ी किताबें छापते हैं बन्दरों और दूसरे जानवरो के नाम पर तस्वीरे छापी जाती है—पता नही वे सच्ची है या झूठी है कि अमरीका में बन्दरों को किस ढंग से मारा जाता है । लेकिन क्या वे भाई, जो इस किस्म की तस्वीरो को छापते है, बतायेंगे कि उन के तहत इन्सानो की क्या हालत होती है, उन के तहत जो इन्सान काम करते है, उन के साथ वे क्या सलूक करते है । जो भाई बन्दरो को सवेरे अनाज डालने के लिए जाते है, क्या वे बतायेंगे कि वे किस तरह से रुपया कमाते है, किस तरह से किसान और मजदूर की खून और पसीने की कमाई को उन से छीन कर ऐयाशी करते है । उपाध्यक्ष महोदय, हमें अब सोचना होगा कि इस देश को आगे ले जाने के लिए बहुत सारी भावनाओं का मुकाबला किया जाय और बहुत सारी भावनाओ के बारे में लोगो को समझाना भी होगा । मै जानता हूं कि इस देश के लाखों किसानो की किस्मत बदल नही सकती, जब तक कि इस देश में आज जो खेती करने का ढंग है, वह न बदले । हमारे देश में सिर्फ़ बन्दर ही नही, जमीन के ऊपर जितने और डंगर है, आया यह देश उन का पेट भर सकता है या नही, यह भी एक सवाल है सोचने का । इस देश में जो इन्सान है, उन के लिए हम ने सुख पैदा करना है । ये जो बन्दर बाहर भेजे जाते है, वे इस लिए नही भेजे जाते हैं कि हम उन को मरवायें, बल्कि वे इस लिए भेजे जाते हैं कि संसार में विज्ञान की तरक्की हो, संसार आगे बढ़े और अहिंसा की भी तरक्की हो, इन्सान की आयु—उस का जीवन— ज्यादा से ज्यादा बढे । (*Interruption.*)

उपाध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर ।

चौ० रणवीर सिंह : मेरी समझ में नही आता कि जो भाई इस में एतराज करते हैं, वे ऐसा क्यो करते है । क्या वे इस बात से अनभिज्ञ हैं कि इस देश में तजुर्बे के लिए बहुत से जानवरो के ऊपर तजुर्बे किए जाते हैं ? क्या उन्हें मालूम है कि जो भाई डाक्टर बनते है, जिन से हमारे वे बड़े-बडे भाई, जो कि अखबारे और किताबें छापते है, रोजाना दवाई लेते है, डाक्टर बनने से पहले पता नही वे कितने मेंडक काटते हैं, कितने खरगोश काटते हैं और दूसरे जानवर काटते हैं और उन पर तजुर्बा कर के देखते है ? अजीब हालत है कि बन्दर के जीवन से साइंस जो तरक्की करती है, उस से तो वे फ़ायदा उठाना चाहते हैं, लेकिन वे बन्दरों को हिन्दुस्तान के किसान के. . . . (*Interruption.*)

Mr. Deputy-Speaker: Even when the subject be monkeys, there ought to be some seriousness about it. We are discussing a Resolution. At least we are sitting in Parliament. Some decorum should be kept.

चौ० रणवीर सिंह : बन्दर से विज्ञान जो फायदा उठाता है, उस विज्ञान के रिसर्च का तो वे फ़ायदा उठाना चाहते हैं, लेकिन वे बन्दर को किसान के कन्धों पर बिठाए रखना चाहते हैं । ऐसे दोस्तों को मैं कहूंगा कि वे

जरा शान्ति से सोचें और इस देश की तरक्की होने दें । इस देश को अनाज की अजहद जरूरत है—दूसरी खेती की पैदावार की बहुत जरूरत है । मुझे मालूम है कि अगर कोई किसान गन्ने की खेती करता है, तो बन्दर मुश्किल से आधा गन्ना चूसता है और दस गन्ने खराब करता है । अगर कोई जानवर ऐसा है, जो अपना पेट भरने के मुकाबले में ज्यादा खराब करता है—चाहे वह अनाज हो या कोई दूसरी चीज हो—तो वह बन्दर है । तोता भी इतना खराब नही करता है । तोते की खराबी की किसान परवाह नही करता है लेकिन बन्दर जो खराबी करता है, उससे किसान सबसे ज्यादा परेशान होता है । मैं चाहूगा कि जो भाई ये किताबें छापते है, अगर व उस रुपए से इन तमाम बन्दरो को पकडवा कर दूसरे देशो का भिजवा दें—आज देश को विदेशी मुद्रा की जरूरत है—और उस रुपए से और कुछ नही तो यहा के भूखे लोगो के लिए अनाज मगवा दें तो मुझ इसमें कोई एतराज नही होगा ।

Shri Easwara Iyer (Trivandrum) Mr Deputy-Speaker, probably it may be the monkey instinct in man

Mr. Deputy-Speaker. I request the hon Member to be very brief because I find there are a large number of Members who want to speak

Shri Easwara Iyer. I shall not take more than five minutes

Probably, as I submitted, before this House, it may be the monkey instinct in man to tear up useful institutions By this I do not mean that I have no sympathy towards the simian family But, I would respectfully submit before the House that reason and logic shall not be allowed to be overridden by simple sentiment

We must examine the position as to why these monkeys, more often than not a nuisance to the Indian villagers, taking away the crops which are necessary for the teeming millions of our country, are being exported to foreign countries Probably one cynic said, I would make a gift of all the monkeys to foreign countries provided they remove them from there, so that our crops may be saved I am not going to that extent We must examine why these monkeys are necessary and these monkeys are exported It has now come out to a number of questions asked in this House that these monkeys which are being exported, are not for any experiments of space rockets or otherwise, but they are necessary for the preparation of a life-saving drug like polio vaccine, which is necessary for the prevention of polymyelitis, otherwise in common parlance known as Infantile paralysis If this vaccine which is prepared out of the kidneys of monkeys is able to save millions of young children from this horrible disease of infantile paralysis by the export of these monkeys, we save not only villagers from the nuisance that has been created, but we are also savmg India as well as the whole humanity from the attack of infantile paralysis which is now raging throughout the world

We have now come to the decision and it has been found, by a lot of examination and reports gathered from various sources very authentic sources, that there is no inhuman treatment of these monkeys which are being exported Of course, my friend might plead for monkeys I am saying there is always a sense of *quid pro quo* feeling in me to appreciate his point of view though in some matters I am not perfectly in agreement with him If his plea in this Resolution is that these monkeys are to be treated humanly or that these monkeys are subjected to cruel treatment if they are exported, I would respectfully submit before this House, that in India, these monkeys—I know from my place, I can speak for my constituency—are not only inhumanly treated, but are more often than not shot down because they are a nuisance to the crops. If these monkeys are to be exported

[Shri Easwara Iyer]

and if they bring foreign exchange to us, I would respectfully say that it is only a welcome sign that the export should not be banned I am not saying that we should revel in the fact that by exporting monkeys, we are earning foreign exchange When it is absolutely necessary for the purpose of manufacture of life-saving drugs like polio vaccine and for also conducting researches in other branches of medical science, I would say, it is more than necessary that the export of monkeys should not be banned

I would only say that we must put in regulations and restrictions on the export of monkeys, so that there is no depletion of the stock I would also say that in making this export possible, there must be rules and regulations for their humane treatment both during transit, before export and also after exporting them, where they are handed over to the institutions which are conducting medical research, for keeping them in ideal conditions

I may, with your permission, refer to the report of the Committee for the Prevention of Cruelty of Animals submitted after a moving speech made by Shrimati Rukmini Arundale in the other House In pursuance of that, they have submitted a report Here, on page 110 of that report,—I am reading from para 271 -they say

> "One section hold the view that every encouragement should be given to the export of monkeys from India for the advancement of knowledge and relief of suffering The result of research conducted on monkeys in one part of the world are available for use for the welfare of man as well as animals all the world over"

They further on say in their recommendation as follows

> "After considering carefully both sides of the question the Committee makes the following recommendations on the question of the export of monkeys —
>
> The Committee feels convinced that the end-use of the monkeys exported from India is scientific and medical research and the production of vaccines, sera and other medicines for the relief of the suffering of humanity as well as of animals While dealing with animal experimentation in an earlier Chapter, it has been recommended that experimentation on animals should be allowed in India under strictly controlled conditions under which pain and suffering resulting from it are reduced to the minimum"

Even the Committee for the prevention of cruelty to animals have considered this subject and they have come to that conclusion Since these monkeys are exported for certain research purposes, their export should not be banned. Even if we could give a gift of some of our monkeys causing nuisance to our agriculturists for making vaccines and other drugs which are helpful in removing infantile paralysis, I would welcome that

I oppose this Resolution, not because I have no sympathy for monkeys but because it is absolutely necessary that these experiments should be carried on for progressive humanity

Mr. Deputy-Speaker: Men must have greater sympathy for human beings!

Shri Easwara Iyer: Yes, rather selfish, Sir

Shri Assar (Ratnagiri) Sir, I beg to move

> "That for the original Resolution, the following be substituted, namely
>
> "This House is of opinion that a Committee comprising of

members of Parliament be appointed to examine the question of the export of monkeys from India.'"

इस संशोधन का यही उद्देश्य है कि आज बन्दरों के बारे में जो गड़बड़ी चल रही है, वह समिति उस पर विचार करे और इस बारे में अपना निर्णय दे और उस निर्णय के अनुसार ही बन्दरों को एक्सपोर्ट करने के विषय पर निश्चय किया जाये और वह उस निर्णय पर निर्भर रहे। यह बात अच्छी है कि जो प्रस्ताव आज सदन के सामने है, वह एक प्रजा समाजवादी सदस्य श्री मोहन स्वरूप की ओर से लाया गया है। उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह कोई भावना का प्रश्न नही है।

चौ० रणबीर सिंह : उन्होंने तो भावना ही कहा है।

श्री मोहन स्वरूप (पीलीभीत) : ट्रैडीशन कहा है।

श्री आसर : यदि यह प्रस्ताव हिन्दू महासभा की ओर से लाया जाता, तो यह मान कर कि ये जडवादी और पुराणवादी मत वाले है, इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार किए जाने की आशा भी न होती। लेकिन यह स्पष्ट हो गया है कि यह भावना का प्रश्न नही है, बल्कि देश की दृष्टि से और हम ने जो तत्वज्ञान अपनाया है, उसकी दृष्टि मे इस पर अच्छी तरह से विचार करने की आवश्यकता है। इसका कारण यह है कि हमारी सरकार ने बौद्ध धर्म का तत्वज्ञान स्वीकार किया है। हम ने अशोक-चक्र को मान लिया है और उसके तत्वज्ञान के अनुसार चलने का निर्णय किया है। हमारे भाई चौ० रणबीर सिंह ने महात्मा गांधी जी का उल्लेख किया। राष्ट्रपिता ने इस बारे में जो कुछ कहा और जो कुछ वह करन चाहते थे, उस सब को छोड कर हम जो कुछ कर रहे है, उसको देख कर ही यह प्रस्ताव इस सदन में लाया गया है। अगर कम्यूनिस्टों का राज्य होता, तो यह प्रस्ताव सदन में न ला सकते थे और न लाने की आवश्यकता होती। लेकिन आज काग्रेस की सरकार है। उसने अहिंसा को माना है। इसलिये यह प्रस्ताव लाने का प्रयत्न हुआ है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि काग्रेस सरकार अपने तत्वज्ञान से गिर चली है, जबकि वह बन्दरो का निर्यात करती है, इस विषय में यह कहा जाता है कि बन्दरो का निर्यात उन पर प्रयोग करने के लिए किया जाता है और उन प्रयोगो से जो पोलियो-वैक्सीन बनती है, उससे संसार में अनेक लोगो के लिए बड़ा अच्छा परिणाम होता है। लेकिन मुझे यह भी पता है कि केवल बन्दरो पर ही प्रयोग नही किए जाते है, कई अन्य प्राणियो पर भी प्रयोग किए जाते है। संसार में कई ऐसे देश है, जिनमें बन्दरो का इस बारे में उपयोग नही किया जाता। जिन प्राणियो का खास उपयोग नही है, उन पर प्रयोग किया जाता है।

एक माननीय सदस्य : कौन प्राणी है ?

श्री आसर : ऐसे बहुत है।

दूसरी बात यह है कि जैसे हमारी आत्मा है, वैसे ही बन्दरो में भी आत्मा है। अगर आत्मा का विचार किया जाये, तो हर एक की आत्मा का योग्य दृष्टि से विचार करना आवश्यक है। इसका कारण यह है कि अपने जीवन के लिये निर्बल पशुओ का उपयोग करना अयोग्य है। यह तो सरवाइवल आफ दि फिटेस्ट का तत्वज्ञान है। अगर यह तत्वज्ञान बढता गया, तो अशान्ति और असन्तोष बढेंगे। अगर यह मनोवृत्ति बढ़ेगी कि निर्बल को मार कर सबल अपने जीवन को सुखी करें, तो आज तो पशु-पक्षियो का कत्ल किया जाता है, लेकिन कल ऐसा समय आ जायगा कि मनुष्य मनुष्य को छोड़ेगा नही, उसको कत्ल करेगा। आज तिब्बत के बारे में हम चीन के विरुद्ध क्यो चिल्लाते है ? अगर हम सरवाइवल आफ दि फिटेस्ट को मानते है, तो चीन बड़ा सामर्थ्यशाली है, वह तिब्बत पर हमला करता है, इस पर आपत्ति क्यो की जाये ? जो देश समर्थ होगा वह दूसरे देश पर हमला करेगा,

[श्री आसर]

ऐसा हम मानते नही है । हमने तो पचशील के तत्वज्ञान को अपनाया है, जिसमें जिन्दा रहो और जिन्दा रहने दो के सिद्धान्त को माना गया है । अगर हम इसको मानते है, तो फिर अगर हमारे पास ताकत और बुद्धिमता है, उसका उपयोग अपने जीवन के सुख के लिये निर्बल प्राणियो को प्रयोग में लाना ठीक नही है ।

तीसरी बात यह है कि हम जो हिन्दू-धर्मवादी लोग है, वे तो मानते है कि हमारा पूर्वज मनु है। लेकिन डार्विन की थ्योरी को मानने वाले लोगो मे मेरा कहना यह है कि डार्विन ने कहा है कि बन्दर हमारा पूर्वज था । जो लोग डार्विन को मानते है, उनसे मेरी प्रार्थना है कि इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि अगर बन्दर हमारा पूर्वज है, तो अपने पूर्वज को मारना ठीक नही है । इस पर भी विचार किया जाए ।

यहा पर फारेन एक्सचेज की विशेष तौर पर चर्चा की गई है । फारेन एक्सचेज के बारे में मै यह कहना चाहता हू कि पैसे के लिए किसी काम को करना, चाहे यह ठीक ही क्यो न हो, ठीक नही है । किसी काम को इसलिए करना कि उससे पैसा मिलता है ठीक नही है । अगर कोई दारू पीने वाला है, अगर उसको दारू हमेशा ही मिलता रहे, तो यह उसका व्यसनी बन जाता है और उसके लिए इस तरह से व्यसनी बनना किसी भी तरह से ठीक नही कहा जा सकता है । अगर हमारा ध्येय पैसा ही है, तो इसका मतलब यह भी हो सकता है कि आज तो हम बन्दर बाहर भेजते हैं और कल हमारे देश में जो जनसख्या बढ रही है, उसको देखते हुए हम आदमियो को अगर गुलाम बना कर बाहर भेजने की जरूरत पडी तो उसमे भी सकोच नही करेंगे और इसका भी यही कारण होगा कि हमें फारेन एक्सचेंज मिलता है । इसं वास्ते मे समझता हू कि केवल फारेन एक्सचेंज की दृष्टि से किसी चीज को बाहर भेजना ठीक नही है ।

यह भी कहा जाता है कि बन्दर फसलो को खराब करते है । मै इस बात को मानता हू । आपकी तरफ से कहा जाता है कि अगर इन को दूसरे देशो मे भेजा गया तो फसलो का नुकसान कम होगा । लेकिन आप कितने बन्दर आज बाहर भेज रहे हैं ? आप ज्यादा से ज्यादा लाख दो लाख ही भेजते हैं । सरकार को यह पता भी नही है कि कितने बन्दर हिन्दुस्तान मे है और न ही इसकी कोई सैंसस ली गई हैं और अगर ली जाए तो पता चल सकेगा कि कितने है । लाख या दो लाख साल मे ही बाहर भेजे जाते है और करोडो बन्दर इस देश में पीछे बच जाते हैं । मै जानना चाहता हू कि उनके बारे मे सरकार क्या करने का विचार रखती है ? क्या वे फसलो को खराब नही करते है ? उनसे कैसे फसलो को बचाया जाएगा ? अगर ये दो लाख बन्दर बाहर न भेजे जाये, तो फसलो को इतना भारी नुकसान नही हो सकता है जितने का कि अन्दाजा लगाया जाता है । इस वास्ते मै चाहता हू कि आप बन्दर बाहर भेजने के बारे मे इस दृष्टि से भी विचार करे ।

मै यह भी कहना चाहता हू कि बन्दरो को भेजे जाने की जो व्यवस्था की जाती है वह भी सन्तोषजनक नही है, वह भी ठीक नही है । हमारे पास बन्दरो के भेजे जाने के बारे मे रेग्युलेशस है, लेकिन इनके होने के बावजूद भी बडी परेशानी का सामना करना पडता है । मैने खुद अपनी आखो से देखा है कि कितने ही बन्दर डेस्टिनेशन पर पहुचने से पहले ही मर जाते है । इसके बारे में मै थोडा सा आपको पढ कर सुनाना चाहता था लेकिन चूकि समय नही है, इस वास्ते पढ़ नही सकता। यह कहा जाता है कि इन बन्दरो को कैरियेजिस मे भेजा जाता है। लेकिन मैं आपको बतलाना चाहता हू कि अगर एक कैरियेज मे छ सौ बन्दर भेजे जाते हैं, तो दो तीन सौ बन्दर रास्ते में ही मर जाते है । अच्छी व्यवस्था उनके ले जाने की न होना, यह भी बहुत खराब बात है ।

इस वास्ते जरूरत इस बात की है कि इनके भेजे जाने की भी अच्छी व्यवस्था हो।

15 hrs

पहले यह कहा गया था कि छ पाउंड के ऊपर के बन्दर ही बाहर भेजे जा सकते हैं और इससे कम के बन्दरो को बाहर भेजने पर रोक थी। लेकिन आज देखने में आता है कि छोटे छोटे बच्चे और ऐसी बदरियां बाहर भेजी जाती है, जिन के पेट में बच्चे होते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि इनका कोई उपयोग नही होता। जो बन्दर बाहर भेजे जायें, वे तन्दरुस्त हों, निरोगी हों, जिससे कि उनका ठीक से उपयोग हो सके।

इन सब चीजो को देखते हुए मैंने एक सशोधन रखा है और मैंने चाहा है कि इन सब बातो की जाच करने के लिये पार्लियामेंट के सदस्यो की एक कमेटी बना दी जाय और वह जिन निर्णयो पर पहुचे, उनका पालन सरकार की ओर से हो। मैं आशा करता हू कि मेरा यह सशोधन सरकार को स्वीकार्य होगा।

सेठ अचल सिंह (आगरा) उपाध्यक्ष महोदय, जो प्रस्ताव हमारे सामने है, उसके सम्बन्ध में सबसे पहली बात मैं यह कहना चाहता हू कि भारत की राजनीति अहिंसा और सत्य पर आधारित है और वह बडी कामयाब साबित हुई है। महात्मा गाधी ने भारत-वर्ष को अहिंसा और सत्य का आश्रय लेकर ही आजादी दिलाई है।

आज से दो हजार वर्ष पहले या उससे और भी बहुत पहले हमारे देश में हिंसा का बहुत प्रचार था। उस वक्त नरमेध यज्ञ, गोमेध यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ इत्यादि यज्ञ हुआ करते थे और इन यज्ञो में काफी हिंसा होती थी। जब भगवान् महावीर और भगवान् बुद्ध ने जन्म लिया तो उन दोनो ने इस चीज के खिलाफ आवाज उठाई और कोशिश की कि मनुष्यो और पशुओ की जो हत्यायें इन यज्ञो में होती हैं, जो आहुतिया दी जाती हैं वे बन्द हों और इसमें वे सफल भी हुए हैं। उसके बाद काफी अहिंसा का प्रचार हुआ। लोगो ने तब महसूस किया कि जितना भी प्राणी ससार है, उस सब मे आत्मा एक सी है। हाथी हो, घोडा हो, बन्दर हो या कोई भी पशु पक्षी हो, सब में आत्मा एक सी है। अगर हमारे शरीर मे कोई सुई चुभोता है, तो जिस तरह से हमें तकलीफ होती है, उसी तरह से अगर किसी पशु पक्षी के सुई चुभोई जाती है, उसको भी तकलीफ होती है। जितने भी जीव हैं, जितने भी परिन्दे और चरिन्दे है, उन सब को एक सी तकलीफ होती है।

क्या हम आज इतने स्वार्थी हो गये है, इतने अन्धे हो गये है, कि सिवाय हमको अपने स्वार्थ के कुछ और सूझता ही नही है। यह कहा जाता है कि बन्दर बहुत नुकसान करते हैं, अनाज की बहुत बरबादी करते है, इसलिये उनको एक्सपोर्ट किया जाए और इनको खत्म किया जाए। यह बात ठीक है कि ये अनाज इत्यादि की बहुत बरबादी करते है। लेकिन अगर हम इनको खत्म करने जा रहे है, तो क्या उनको भी खत्म करें, जो कि कोई काम नही करते है, जो अपाहिज हैं, जो बीमार है, जो बूढ़े है, जो हमारे बुजुर्ग है? उनको भी हमें खाने को देना पडता है, इस वास्ते इसी बिना पर उनको भी खत्म कर देना चाहिये। मैं समझता हू कि यह थ्यूरी कम से कम भारत-वर्ष मे लागू नही हो सकती है। हम आध्यात्मिक बातो को अधिक महत्व देते है।

हमारे प्रधान मन्त्री महोदय ने पचशील का नारा लगाया है और कहा है कि जियो और जीने दो। वह कहते हैं कि हर एक को जीने का अधिकार है, कोई किसी को गुलाम बना कर नही रख सकता है।

अब आप देखें कि जब बन्दरो का निर्यात होता है किस तरह से उनको बन्द किया जाता है, किस तरह से उनको जकड कर रखा जाता है। बहुत से बन्दर तो रास्ते में ही मर जाते हैं और डेस्टिनेशन तक पहुच नही पाते हैं; उनके साथ बहुत खराब बरताव किया जाता

[सेठ अचल सिंह]

है, चैन के उनको बांध दिया जाता है, थोड़ा थोड़ा करके उनको काटा जाता है और तजुर्बे किये जाते हैं । इस तरह से बेरहमी से उनके साथ पेश आया जाता है कि बरदाश्त नहीं किया जा सकता है । सभी देशों ने प्रिवेंशन आफ क्रूअल्टी टू एनीमल्स एक्ट बनाये है और उनकी कोशिश यह रहती है कि इन जानवरों के साथ जुल्म न हो, बेरहमी नहीं होनी चाहिये । यह सभी सभ्य देशों में है और हमारे देश में भी इस तरह का कानून है । इस वास्ते मैं कहना चाहता हूं कि जो प्रस्ताव पेश किया गया है, वह बहुत ही अच्छा प्रस्ताव है, बहुत ही उचित है और जो बन्दरो का यहां से निर्यात होता है, वह बन्द होना चाहिये ।

इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और चाहता हूं कि सारा हाउस भी इसका समर्थन करे ।

श्री रामसिंह भाई वर्मा (निमाड) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं मूल प्रस्ताव का विरोध करने के लिए खडा हुआ हू ।

श्रीमान्, एक बात इसमे आपको देखनी होगी और वह यह कि हम किस देश मे रहते है, उसका क्षेत्रफल क्या है, वह कितना उत्पादन करता है, उसकी जनसंख्या क्या है और किस प्रकार से वह लगातार बढ रही है । इन बातों को देखते हुए सबसे प्रिय अगर हमे कोई चीज हो सकती है तो वह अपना देश ही हो सकता है और देश के बाद देश की जनता हमे सबसे प्रिय हो सकती है । इस वास्ते देश की हिफ़ाजत और जनता की जरूरतो की पूर्ति करना पार्लियामेंट का सर्वप्रथम कर्त्तव्य हो जाता है ।

जो लोग अपने आप को डार्विन का अनुयायी मानते हैं और बन्दरो को अपना पितर मानते है, और उनकी उन पर जो श्रद्धा है, फ़िर वह चाहे जितनी हो, मुझे उसके बीच में नहीं आना है । लेकिन मुझे इतना अवश्य कहना है कि आज हमारे देश की हालत यह हो रही है कि जो लोग विदेशों में जाते हैं और वहां के लोगों से बातचीत करते हैं तो वे कहते हैं कि हिन्दुस्तान में जानवरों की संख्या बे शुम्मार बढ़ती जा रही है और वहां के लोग इतने अन्धविश्वासी हो गये हैं इन जानवरों के प्रति कि ये जानवर ही एक दिन हिन्दुस्तान की जनता को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल कर रख देंगे । क्योंकि दरअसल आज देश की हालत है हम आज अपने बाल बच्चों को तो सम्भाल नही सकते, अपनी बीवी को सम्भाल नही सकते, माता पिता को सम्भाल नही सकते, ऐसी आर्थिक हालत हो रही हैं । मै माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि आप जाकर गरीब मोहल्लों में देखिये कि वहां क्या हो रहा है । पति बेरोजगार हो जाता है तो औरत को घर से निकाल देता है । माता पिता बुड्ढे हो गये है तो उनको और अपने बच्चो को घर बिठला कर खिलाने के लिये कोई तैयार नही है । वे बूढे मां बाप के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते है कि किसी तरह से इन्हें उठा लो और यह सकट काटो, जबकि आप को बन्दरो से इतना मोह हो गया है कि उनके लिए कोई राम की दुहाई देता है कोई कृष्ण की दुहाई देता है, कोई हनुमान की दुहाई देता है और देवता मानता है । कोई कहता है कि हम तो बन्दरों से पैदा हुए है । लेकिन यहा पर तो प्रथम सवाल इन्सानियत का है । सबसे पहले हमारे लिए इन्सान को जिन्दा रखने का सवाल है । आप जरा देहातों के अन्दर जा कर देखिये कि वहां बन्दरो के कारण किसान लोग कितने त्रस्त हो रहे हैं । गरीब के घर के अन्दर से पकी पकाई रोटी निकाल कर ले जाते है और बच्चे भख से रोया करते है, उन को रोटी मिल नही पाती ह । हम बीवी बच्चों को ले कर देश मे देव दर्शनों को जाया करते है, जिन की असबाब की पोटली को बन्दर उठा कर ले जाते हैं ऐसी हालत में उन का घर पहुंचना तक मुश्किल हो जाता है । बेचारों को किराया तक के लिये

भीख मांग कर अपना काम चलाना होता है। आपको इन बातो को भी देखना चाहिये। आप अहिंसा की आड़ में यहा कहते हैं कि महावीर ने ऐसा किया, बुद्ध ने ऐसा किया। लेकिन हम महावीर नही हैं, हम बुद्ध नही हैं। हम गाधीजी नही हैं। हम साधारण व्यक्ति हैं और जिन्दा रहना चाहते हैं। इन्सानियत का फर्ज हो जाता है कि प्रथम अपने बच्चो को दोनो टाइम खाना दे। किन्तु जो लोग मानव के बजाये बन्दर पालन की ऐसी बाते करते हैं उनको विचार करना चाहिये कि वे यहा पर किनके प्रतिनिधि होकर बैठे है। वे उनके प्रतिनिधि है जो देश के अन्दर गरीब है, जिन के पास दोनो टाइम खाने के लिये अन्न नही हैं। इसलिये हमारा फर्ज है कि हम पहले उनके खाने का प्रबन्ध करें। आज बन्दरो से उन गरीब किसानो का कितना नुकसान होता है इसको भी तो आप सोचिये। जो लोग आज गरीब है, उन गरीब किसानो और गरीब तीर्थ यात्रियो का जो बन्दरो के कारण बराबर नुकसान हो रहा है पहले हम को उसका इन्तजाम करना चाहिये किन्तु आज जो लोग यहा पर मानव के बजाय बन्दरो की हमदर्दी करते है, वे कम से कम २५-२५ बन्दर सौप दिये जावे जो अपने घर पाल कर देखे कि क्या मामला है और आप की हमदर्दी कितनी किस के साथ है। मेरे पास इसमे कहने को बहुत बात है, आप मुझ मौका दे तो मै सारा दिन इस पर बोलने मे गुजार दू। (*Interruptions*)

Mr. Deputy-Speaker: Order, order. In spite of my repeated requests, I find that talking is going on on every side of the House. I would request hon Members to listen patiently Even those hon. Members who had got a chance to speak and have utilised the opportunity are still continuing to talk I am very sorry to note that.

Shri Surendranath Dwivedy (Kendrapara): It is so interesting that they are reacting.

Mr Deputy-Speaker: Then, should I go out?

श्री रामसिंह भाई वर्मा : हिन्दुस्तान के आजाद हो जाने के बाद बहुत सी प्रान्तीय सरकारो ने विचार किया कि अपने बाल बच्चो की रक्षा के नाम पर देवताओ के सामने जो जो पशु बलिदान किया जाता है वह एक अन्धविश्वास है। देश मे अपने बच्चो की रक्षा के लिये कोई भैरोजी और कोई बालाजी या किसी दूसरी जगह ले जाकर अगर कोई बकरे को काट दे तो यह ठीक नही है। यह किस्सा घर घर चलता था। प्रान्तीय सरकारो ने सोचा कि यह अन्धविश्वास बन्द किया जाना चाहिए। अपने बच्चे की रक्षा के लिये दूसरे के बच्चे का बलिदान होना ठीक नही है। जब प्रान्तीय सरकारो ने ऐसे कानून बनाने शुरू कर दिये तो इन बन्दरो के एक्सपोर्ट बन्दी की बात करने वालो ने ही उनका विरोध करना शुरू कर दिया। कहने लगे कि सरकार हमारी धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुचा उभारती है, वह देवताओ पर होने वाले बलिदान को क्यो बन्द कर रही है? एक ओर तो सरकार जो अच्छा काम करने लगती है यानी यह कि हर गाव गांव मे देवी देवताओ पर जो बकरे वगैरह काट कर बलिदान किया जाता है, उसे रोका जाता है चकि सरकार ने यह विचार किया कि यह अन्धविश्वास है, उसका तो विरोध करना और दूसरी ओर अगर बन्दरो का एक्सपोर्ट किया जाता है तो कहते है कि एक्सपोर्ट क्यो किया जाता है? केवल पैसा कमाने के लिये ऐसा नही किया जाना चाहिये लेकिन सारी चीजो और सारी परिस्थितियो पर विचार करके मै तो यह मानता हू कि बन्दर ही नही ऐसे और भी प्राणी जो देश मे है जिनके कारण देश को नुकसान पहुचता है उन्हें एक्सपोर्ट करना चाहिये इसी में कि देश का भी भला है।

यहा पर दूसरे लोग भी है जो कि इस पर बोलना चाहते हैं, मै उनका समय नही लेना चाहता। हालांकि इस पर काफी कहा

[श्री रामसिंहभाई वर्मा]

जा सकता है लेकिन मैं इतना ही कहूंगा कि मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं और इस सदन से निवेदन करता हूं कि जितने ज्यादा से ज्यादा बन्दरों को, और जो दूसरे प्राणी हमारे देश को नुकसान पहुचाने वाले है, उन्हें जल्दी से जल्दी यहा से विदा कर दिया जाय । जब आज हमारे किसान के लिये रहने की जगह नहीं है तो फिर उनको कैसे यहा रक्खा जाय ?

श्री खादीवाला (इन्दौर) : उपाध्यक्ष महोदय, जो प्रस्ताव रक्खा गया है, मैं उसके समर्थन में बोलने के लिये खडा हुआ हू । बन्दर इस देश में काफी महत्व रखता है । हमारे हिन्दुस्तान की हमेशा से यह परम्परा रही है कि हम प्राणी मात्र से, जीव मात्र से प्रेम करे । मेरे कहने का यह मतलब नही कि अगर कोई जानवर हमारा नुकसान करता है और उससे हमे कोई तकलीफ होती है तो उसके लिये भी हम इस तरह से समर्थन करे । मेरा कतई यह मतलब नही है । लेकिन जिस तरह से बन्दरो को पकड कर ले जाया जाता है, उसे मैने झासी स्टेशन के ऊपर देखा । एक जगह पर इतने ज्यादा बन्दर भरे हुए थे कि उनके लिये जगह भी नही थी, उनके खाने का भी इन्तजाम वहा नही था । काफी गन्दगी उन से फैल रही थी । जिस तरह से उनको पकड पकड कर रक्खा जाता है उसे देख कर अफसोस होता है और यह चीज ठीक नही है ।

जो भी जीव जन्तु पैदा होते है वे प्रकृति के द्वारा होते हैं । सब को प्रकृति ने पैदा किया है । उन को इस तरह से नष्ट करने के मैं बिल्कुल खिलाफ़ हू और जो प्रस्ताव रक्खा गया है वह बिल्कुल ठीक है और मैं तो कहूगा कि इस का पूरी तरह से समर्थन करना चाहिये । बन्दरो को पकड कर ले जाने, मारने और उन के द्वारा पैसा हिन्दुस्तान में लाने की जो नीति है मैं उसे ठीक नही मानता । अगर हम को रुपया चाहिये, पैसा चाहिये तो उस के लिये बहुत से दूसरे तरीके सम्भव है जिन के द्वारा हम विदेशो से अपने यहा पर धन ला सकते है । लेकिन बन्दरो को हम पकड़ें और उन के पास भेजें, वे उन को मारे या उन पर किसी तरह का प्रयोग करे, यह ठीक बात नही देश की धार्मिकता के लिये भी हमारे गाव गाव में जो रामायण का पाठ होता है उन में बन्दरो का बहुत महत्व है, बन्दरो से ही मनुष्य बने है । अगर हम देखें कि मनुष्य कैसे बना, अगर हम अपनी शक्ल से बन्दरो को थोडा मिलायें तो देखेंगे कि बन्दर भी बडी बुद्धिमत्ता से काम करता है और बन्दर के ही आगे जा *कर पूरा मनुष्य बनता है । इस लिये मैं* बन्दरो को इस तरह से मारने का जो तरीका है उसे पसन्द नही करता । पृथ्वी पर रहने वाले जो भी प्राणी है उन सब के लिये यहा साधन बने हुए है । हमारे यहा जितने भी ऋषि और महर्षि हुए उन्होने भी यही कहा कि "जियो और जीने दो" । उन के इस कहने के खिलाफ भी यह तरीका आता है । इस लिये मैं कहता हू कि बन्दरो का इस तरह से पकड कर भेजना बिल्कुल ठीक नही है और मैं उस के सख्त विरुद्ध हू ।

Shri M. B. Thakore (Patna). I fully support the resolution of my learned friend Shri Mohan Swarup regarding the ban on the export of monkeys

I patiently heard my learned friends Ch. Ranbir Singh and Shri Easwara Iyer from that side. I find that we have become very selfish, we always think of ourselves, we forgot about others and what they feel.

We say we are civilised—in what way I do not understand. Our friends talk of *ahimsa*, but as far as insects and this kind of animals are concerned, they forget about *ahimsa*. They talk selfishness and nothing else. They are so self-centred that they have no eyes to see. They talk of no hearts to feel, and no ears to

hear. I really wonder that the followers of Mahatma Gandhi talk about the usefulness of exporting monkeys for slow killing and earning some foreign exchange out of it.

It is extraordinary that there are very few monkeys left now and the export earned by the Government will not be more than Rs. 1 crore or so in all, even then they create too much fuss about it! The number of monkeys exported in 1953 is about 20,700, in 1954 it was 66,700 in 1955 it was 93,000 and in 1956 it was about 1,20,600. It is too many.

I support this resolution on two grounds—religious and humanitarian. When we come here, we forget our constituency people, what they feel about these things.

Ch. Ranbir Singh: We remember.

Shri M. B. Thakore: I also do, that is why....

Ch. Ranbir Singh: We remember, that is why we oppose it.

Mr. Deputy-Speaker: Order, order. Is it going to be settled just now?

Shri M. B. Thakore: In Gujcrat the so-called monkey is worshipped as Hanuman everywhere, and if my hon. friend, Ch. Ranbir Singh, goes there and talks about exporting them, he will be beaten to death.

Mr. Deputy-Speaker: Would they like all monkeys from other parts to be exported to that region?

Shri M. B. Thakore: They will.

Shri D. C. Sharma: The hon. Member should be sent there as a test case!

Shri M. B. Thakore: Whenever I go to my village, I stay there. I do know the minds of the villagers. Nobody has any serious complaint about the monkeys, and they are not ruining the crops as Ch. Ranbir Singh puts it. I do not believe in it. I do not think they ruin so much, because they only like bananas, fruits and gram to eat, and sometimes some other things.

Mr. Deputy-Speaker: If they like bananas, fruits, grams and other things, what then do they want?

Shri M. B. Thakore: They do not take rice, bajra, jawar and wheat or pulses. So the question of fear on the part my hon. friend, Ch. Ranbir Singh, does not arise.

The second point I want to make is on the point of humanity.

श्रीमती सहोदरा बाई राय : उपाध्यक्ष महोदय, थोड़ा समय इनके बाद मुझे भी दिया जाय ।

Shri M. B. Thakore: A reliable eye-witness has told us:

> "Trappers bring in all sorts of monkeys, and those which are babies, or pregnant, or unhealthy are rejected by the buyers. I have watched the unloading of monkeys from the Lucknow train. After hours spent in.... cages on railway platforms and a long journey with blackness and the terrifying vibrations and noises of the luggage vans in which the large bamboo cages are stacked up to the ceiling, the monkeys.. are unloaded by one or two attendants. They drop the cages from the luggage van and then turn them *end over end* along the platform.... the screaming monkeys, already thoroughly frightened by the first drop, cling to the sides and top of the cage".

Not only that, many monkeys, when they reach London, die on account of the arduous conditions of travel. Then they are thrown somewhere. Even if some diease is spread among the monkeys, nobody cares. They are after money. The Government also are after money. They do not think anything else.

So I would again request the hon. Members who do not support the

[Shri M B. Thakur]

Resolution on the ground that they destroy and ruin crops and on the ground that their export earns foreign exchange, to support this Resolution on the ground of humanity and not be so selfish as to think that they are the only persons living on the earth

श्रीमती सहोदरा बाई राय (सागर—रक्षित—अनुसूचित जातिया) उपाध्यक्ष महोदय, हमारे कई भाइयो ने जो बदरो का विरोध किया है वह बिल्कुल गलत है । हमारे देश में दो तरह के बदर है । एक तो काले बदर है और दूसरे लाल गोरे बदर अंग्रेजो के मुआफिक है (सदन में हसी)

उपाध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर, देखिये आपने वक्त मागा था सो आपको दे दिया गया है लेकिन आप कोई ऐसी बात न कहें जो कि उचित न हो ।

श्रीमती सहोदरा बाई राय : मै पाच मिनिट के अन्दर ही अपनी बात समाप्त कर दूगी ।

उपाध्यक्ष महोदय : वह तो ठीक है लेकिन यहा पर वही बात कहनी है जो कि उचित हो, कोई अनुचित बात नही कहनी है ।

श्रीमती सहोदरा बाई राय : मै तरीके से ही कह रही हू । दो तरह के बदर अपने देश में है

उपाध्यक्ष महोदय : मगर इसके बताने के लिए बाहर जाने की क्या जरूरत है ?

श्रीमती सहोदरा बाई राय : एक तो काले बदर हैं और दूसरे लाल बदर हैं । अब काले बदरो द्वारा तो शायद खेती को थोड़ा बहुत नुकसान भी पहुचता हो लेकिन लाल बंदरों से तो कोई नुकसान नही होता । वह लाल बंदर तो इतने प्रेमी हैं कि अगर कोई तीर्थ यात्री वहा तीर्थ पर पहुचता है तो वह रास्ते पर मुट्ठी भर चने की आस लगाये बैठे रहते हैं और आप यदि उन्हें मुट्ठी भर चना दे देते हैं तो वे कुछ नही बोलते और प्रेम से उसको चबाते रहते हैं लेकिन अगर कही आपने उनके सामने मुट्ठी भर चना नही फैका तो फिर वे बदर आपकी पोटली खीच कर भाग जाते है और जब तक आप उनको थोडा चना खाने के लिए नही दे देगे तब तक वे आपका पिंड नही छोडते, पोटली नही देगे । मै ने और मै समझती हू कि मेरे बहुत से माननीय सदस्यो ने भी यह देखा होगा कि इलाहाबाद, जगन्नाथ जी और अन्य तीर्थ स्थानो पर यह बदर रास्ते पर बैठे हुए मिलते है और वे किसी का नुकसान नही करते है ।

मै समझती हू कि जिन भाइयो ने बदरो का विरोध किया है वे शायद नास्तिक विचार के होगे क्योकि यह आप क्यो भूल जाते है कि हमारे जामवन्त, बाली और सुग्रीव हनुमान आदि का स्वरूप बदरो का ही था और जिनको कि हम लोग आदर की दृष्टि से देखते है । श्री रामचन्द्र के जमाने मे इन वानरो ने रावण के खिलाफ उनकी कितनी मदद की थी । मै तो कहूगी कि बदरो को बाहर न भेजा जाय ।

अब बदरो की महिमा के बारे मे मै आपको बताऊ कि एक बार महात्मा तुलसीदास बादशाह अकबर के दरबार में आये । बादशाह ने कहा कि महात्मा जी हमें ससार की कोई नई चीज बताइये । महात्मा जी ने उत्तर दिया कि राजन् मै कुछ नहीं जानता । बस इतनी सी बात पर क्रुद्ध होकर अकबर बादशाह ने तुलसीदास को जेल में बद कर दिया । अब जब तुलसीदास जी जेल में बंद हो गये तो उन्होने हनुमान जी की स्तुति की और भगवान की लीला देखिये कि लाखों बंदर वहा पर इकट्ठा हो गये और अकबर की नाक में दम आ गया । अकबर की परेशानी

को देख कर बीरबल ने कहा कि हे राजन् तुमने यह अच्छा नहीं किया जो एक साधू को तुम ने अकारण जेल में बंद कर दिया। अगर उस साधु को तुम जेल से बाहर निकाल दो तो यह जो बंदरों का कोप तुम पर जाग्रत हुआ है वह समाप्त हो जायगा और ऐसा ही हुआ भी। इसलिए मेरा कहना है कि हम यहां पर राम राज्य की बात सुनते है और हमारे पूज्य बापू जी भी इस देश में रामराज्य फिर से स्थापित होते देखना चाहते थे तो मैं उन लोगो को जो कि बंदरों के विरोधी हैं और उनको यहां से बाहर भेजना चाहते हैं, चेतावनी देना चाहती हूं कि कही आपकी इस बात से हनुमान जी नाराज न हो जायें और कही आपकी यह नई दिल्ली की नींव ही न हिल जाय। मैं तो अपने उन मित्रो से कहना चाहूंगी कि अगर बंदरों के कारण उनको तक़लीफ़ होती हो या बदर अगर उनका कोई नुक़सान करते हों तो बड़ी खुशी से हमारे मध्यप्रदेश में ले जाकर उनको छोड़ दीजिये। (सदन में हंसी) हम उनका पालन कर लेंगे। हमें उनसे कोई नुक़सान नही है। आपको यदि अड़चन पड़ती हो तो आप हमारे प्रदेश में उनको छोड दीजिये। हमारे यहां पर बड़े बड़े जगल है, वे मजे से वहा पर फल फूल और बेर इत्यादि खायेगे। हमारे दिल में बदरों के लिए प्रेम और आदर है क्योंकि हनुमान जी जिनको कि हम देवता स्वरूप मानते है उनका स्वरूप भी बंदर का ही था। हमारे हिन्दुस्तान की प्राचीन काल से जो परम्परा चली आ रही है, हमारा जो सनातन धर्म है, उस के विरूद्ध जा कर क्या हम अमरीका में बन्दरों को भेज कर उन का गला कटवाये? वे जगह जगह पिंजरो में रोते है, चीखते है और रास्ते में उन को पानी नही मिलता है। क्या उन का आप भारत पर नहीं पड़ सकता है? मेरी प्रार्थना है कि बंदरों को बाहर भेजना बन्द करने के बारे में जो प्रस्ताव आया है, वह जरूर स्वीकार करना चाहिए। भविष्य में इस से नुकसान होगा—आगे चल कर नुक़सान होगा। जो भाई बन्दरों से नुकसान होने की बात करते हैं और इस कारण इस प्रस्ताव का विरोध करते हैं, वे सब बन्दर हमारे मध्य प्रदेश मे छोड़ दें। हमें उन से कोई नुकसान नहीं है। हम उन की रक्षा करेंगे। लेकिन बन्दरों को बाहर भेजे जाने की हमारी सम्मति नही है। जो नास्तिक विचार के है, वे उन को देवता का रूप नहीं मानते हैं। एक तो रामचन्द्र जी का राम-राज्य था, जिस में बन्दरों ने उन की इतनी सहायता और सेवा की थी और अब महात्मा जी ने जो राम-राज्य बनवाया है, क्या उस में हम बन्दरों को अमरीका भेज कर उन का गला कटवायें? मै बाहर बन्दर भेजे जाने का विरोध करती हूं और मेरी प्रार्थना है कि बन्दरों का निर्यात बन्द किया जाये।

Shri V. P. Nayar (Quilon): I believe those who support this Resolution do so on account of various misconceptions about the uses of monkeys. I cannot agree with this Resolution because it will have an effect not merely in our country but in the whole world against the determined fight which scientists are putting up in the matter of eradication of diseases.

It is not new that living animals have been experimented upon to find how the living tissues inside them react when various diseases have to be studied. There are several pamphlets distributed to us, some of which have been very kindly given to me by the hon. Mover himself, in which I find that objection is now taken primarily because these monkeys—*Macacus rhesus*—are sent out of India more for purposes of vivisection than for anything else. We also know what is vivisection. It is also necessary; if you follow recent trends in medical research, you will find that today a special emphasis has been laid on doing research on living animals, and the purpose for which the rhesus monkey has been exported in such a large number in the recent past has been to find out how best to control poliomyelitis. We know

[Shri V. P Nayar]

that this is a disease which affects tissues of the brain and also of the spinal cord It has eluded any solution by constant research from 1909 onwards First of all, the problem was to identify the virus which caused the disease, and subsequently although it was known even from 1910 or 1911 that a strain of this virus could be injected into the bodies of other animals to producing something similar to poliomyelitis, research showed that only the macacus rhesus monkeys and the chimpanzees could be used for this purpose We all know that the chimpanzees are not available anywhere in the world in such large numbers and poliomyelitis, fortunately, is not a pressing issue for us, although it is a very very serious disease in several other countries Therefore, it is idle for us to say—although we may be said to be sentimental to some extent—that monkeys should not be sent out.

After all, research has established success in this and more successes are in view Because we have a sentiment and because we have some kind of fascination for the monkey, to say that we should not send monkeys would be to say something ruinous to the cause of fighting disease It is not a question primarily of earning foreign exchange alone It may not be calculated in lakhs as is sought to be made out. It may be Rs. 25 lakhs or Rs 28 lakhs That is not the point It is absolutely necessary, since we in India do not have the wherewithal to do research in such diseases that we must send them out for purposes of research, whether it is for medical research or for other researches

But, then, the question arises whether, when our people have a sentimental weakness for the monkeys, the present regulations which govern the export of monkeys are adequate I remember some time ago the hon. Minister telling us that monkeys below 6 lbs or 4 lbs, or whatever it was, were not being allowed to be exported

An Hon. Member. Now, it is 4 lbs

Shri V. P. Nayar: It means that they are very very young monkeys because the normal weight of a full-grown rhesus monkey will be anything between 15 to 20 lbs

I have myself seen how they are being loaded and unloaded here in the stations It is open to the Minister to have some restrictions But, speaking, on the resolution generally, I think that instead of banning export, the export of more monkeys should be thought of only, that should be put under some more control.

I do not like to go into the question of destruction of crops or the destruction of other property by the monkeys I am not in possession of facts and I do not think the Government of India have a survey report on that, except that I know that sometimes very secret files from the Ministries are missing and the monkey finds a convenient excuse.

An Hon. Member Now do you know of secret files?

Shri V. P Nayar: The monkeys take them I will leave it at that.

Therefore, I earnestly request the hon Mover not to be swayed by sentiments in view of the tremendous progress made It is not the case of the monkey alone We know that very recently, after 1950, there has been a similar attempt made for combating another disease which is known as Addison's disease It was the cat which was used A living cat is necessary because the adrenal cortex has to be taken away from a living cat and the reaction has to be watched. Ultimately, it proved that in such a dreaded disease which emaciated the victim and resulted in his death ultimately, the first palliative

could be provided only by preparations made out of the living adrenal cortex of the cat Therefore this vivi-section is nothing new, it has been there and it has to be there, and we should do every thing to encourage the export of monkeys if we are satisfied that the purpose for which they are exported is *bona fide*

I do not propose to go into the details of how this may be used for supersonic flights and also for finding out the effects of radio-activity because the time at my disposal will not permit me I therefore sit down with the request to the hon Member that he should withdraw the resolution in view of the fact that monkeys are sent out of India not so much for foreign exchange which we may earn as for purposes for which no other animal can be substituted

The Minister of Commerce (Shri Kanungo): Sir, it has been my misfortune to be associated with this monkey business for quite a long time

Shri V. P. Nayar: It is your good fortune

Shri Kanungo: But today my task has been made very easy by the many speakers who have participated in the debate In fact, I feel I do not have to add much more to what has been mentioned by the several hon Members who have opposed this resolution

In the first instance I will take up the amendment which Shri Assar has introduced This matter has been discussed in this House and the other House on several occasions And, today we have evolved a series of regulations which ensures the humane treatment of these animals during their transit not only out of India but also in India.

I will not waste the time of the House in reading out the regulations (*Interruptions*) They have been laid on the Table of the House on several occasions and they are available in the Library for consultation All I would emphasise is that the regulations are such that regarding storage, transport and feeding, they are very carefully drawn up and we are making our best efforts to see that the regulations are enforced

To start with, the number of exporters is strictly licensed They have to undertake on pain of severe penalty, to observe all the regulations I believe the total number of exporters will not be more than half a dozen

One of the regulations requires these exporters to maintain sanitary monkey farms at the point of embarkation The monkey farms are supervised by competent veterinary men

Dr. Sushila Nayar (Jhansi): Sir, instead of handling it through half a dozen exporters and keeping supervisors and so on why do they not handle it themselves? Why don't they have State trading?

Shri Kanungo: I do not understand what difference it will make.

Dr Sushila Nayar: You then can enforce these regulations without any difficulty

Shri Kanungo: The regulations are working I suppose there is nothing wrong about them Whoever is trading, these regulations will have to be observed.

Dr Sushila Nayar: They are not observed

Shri Kanungo: I do not know what justification the hon Member who interrupted me has about the State stepping into this trade. (*Interruptions*).

Shri Feroze Gandhi (Rae Bareli): The suggestion is that it should be

[Shri Feroze Gandhi]

taken in the public sector and should be taken away from the private sector.

Shri Kanungo: I do not know what argument the hon. Member has. I suppose, on another occasion—(*Interruptions*)—on another occasion she can do that; but in this debate she has not participate and I am unable to know her arguments which, possibly, may be very valid. But I do not know them here. (*Interruptions*).

Mr. Deputy-Speaker: Order, order.

An Hon. Member: So that the country can be proud of it.

Shri Kanungo: I can understand the arguments of those hon. Members who have had an opportunity of speaking on this. I will give some examples of the regulations. Before embarkation, all the animals have got to be examined by a competent veterinary surgeon; and the customs man is right on the spot when they are transferred to the cages, the dimensions of which are specified All these specifications have been drawn in consultation with medical authorities and competent sanitary authorities The animals can be transported out of India only by aircraft They are taken care of on flight and they are taken care of at transhipment also. And, above all, the Government of India has seen to it that periodically the end uses of the animals in the different laboratories are also inspected. Much was made of an incident, a very sad incident, which occurred in 1955. That showed us that our regulations were inadequate at that time. It did shock sensitive people who knew about the incident and particularly the Prime Minister was keen about avoiding possible hardships. In 1955 March, for the time being, the export of monkeys was banned. Thereafter, scientific institutions from all the world over, supported by their respective Governments approached the Government of India to lift this prohibition because according to them, justifiably, as some hon. Members have mentioned, this particular variety of animal is necessary for scientific production of vaccines for diseases such as infantile paralysis. Thereafter, these elaborate regulations have been framed in consultation with the laboratories who undertook—their respective Governments supported that undertaking—that these regulations will be observed not only in India but outside also. The question of money does not enter at all; it is insignificant as far as money value is concerned where our export earnings are of the order of 600 crores rupees. As a matter of fact, I would remind the House that this was stopped at one time in 1955. But some of the hon Members have already mentioned that it should not be stopped in the interest of scientific progress and eradication of the disease which has been very much common in the world. Severe regulations are there.

I would refer to Shri Assar's amendment. I do not know what more anybody can suggest I would ask Shri Assar to read the regulations and would like to know what more safeguards can be suggested by anybody, what more safeguards can be provided for Today regulations cover the operations right from the point of catching to the point of disembarkation, and also their use in the laboratories is regulated These regulations are supervised in their enforcement by competent bodies. The animals are not sent to anybody except those authorised by reputed laboratories in the world. Recently, we tried to find out the number of animals which would be required by our own scientific institutes in India and their estimate comes to a little more than a lakh. If the House thinks that the export should be stopped, would it like to go on the same principle and say that the scientific work in our country should also be stopped? I fully realise that sensitive people do feel and ought to

feel about the capture, caging and transport of animals. We are rightly proud of our heritage where large sections of population are sensitive. Times being what they are and the urgent necessities of mankind being what they are, I suppose that we cannot accept the Resolution and the House would not like to put a ban on the export of animals limited to scientific use only

As far as the other factors are concerned, I would say that hon Members may calculate as to how much money and how much effort are spent by various municipalities and Governments in getting rid of the nuisance of the monkeys in various places At least I was connected for sometime with a State Government and I knew that the annual budget for the destruction of monkeys at the rate of Rs 2 per monkey was Rs 60,000 That was done on the insistent pressure of the legislature and the population there Therefore, I would join Shri Nayar in requesting the Mover not to press this motion but to drop it

Shri M. S. Aney (Nagpur) May I ask if this export has in any way helped to reduce the nuisance in those places which are infested with monkeys?

Shri Kanungo: The nuisance is so heavy Somebody mentioned whether we have any apprehension about this particular fauna becoming extinct I suppose the number is too many and competent authorities have said that we can safely export 250,000 monkeys per year We have not reached that figure yet

Mr. Deputy-Speaker: There is an invitation from Madhya Pradesh

श्री मोहन स्वरूप : उपाध्यक्ष महोदय, काफी देर से बन्दरो को बाहर भेजने के मुताल्लिक लोगो के ख्यालात मैं सुन रहा हूं ।

बहुत से दोस्तो ने कहा कि बन्दर खेती को नुकसान पहुचाते है । लेकिन मैं कहता हू कि बहुत से केसेज में खेती को नुकसान पहुचाने वाले आदमी है । आदमी चुराते है, फसलें काटते है, खेतो को नुकसान पहुचाते है । मेरे दोस्त चौधरी साहब जानते है, और जिन का खेती से ताल्लुक है वे जानते हैं, कि जानवरो के मुकाबले इन्सान खेती को ज्यादा नुक्सान पहुचाते है । तरह तरह की चोरिया होती है । और जहा तक बन्दरो का ताल्लुक है, उन से कही ज्यादा दूसरे जगली जानवर, जैसे बारे है, चीतल है, झाख है, तोते हैं, दूसरी चिडिया हैं, इन्सेक्ट्स है, यह नुक्सान पहुचाते है । लेकिन मुझे ताज्जुब होता है कि जब कभी खेती को नुक्सान पहुचाने की बात आती है तो सिर्फ बन्दरो के ऊपर सारा कुसूर लाद दिया जाता है । यह चीज मेरी समझ मे नही आती ।

दूसरी बात यह कही गई कि साइंटिफिक रिसर्च के लिये बन्दरो का बाहर भेजना मुनासिब है । मैं देखता हू कि साइंटिफिक रिसर्च तो कम होती है, लेकिन, जैसा नायर साहब ने कहा, बाहर हवा में बन्दरो को भेजा जाता है और उन के जरिये से एक्सपेरिमेंट्स होते है । तरह तरह के न्यूक्लिअर वेपन्स को ज्यादा एफेक्टिव बनाने के लिये बन्दरो के ऊपर तजुर्बात होते है, कमरो मे वे बन्द कर दिये जाते हैं ।

Shri Kanungo: May I interrupt We have made enquiries and we have been assured and we are satisfied that the animals are not used for any research connected with neuclear fall-out and all that

श्री मोहन स्वरूप : मैं समझता हू कि मिनिस्टर साहब को शायद इन्फार्मेशन कम है । इस बारे मे मेरे पास जो सेंट पेपर्स आये है, वे साबित करते हैं कि इस किस्म के तजुर्बात हो रहे हैं न्यूक्लिअर वेपन्स के मुताल्लिक। जहा तक हिन्दुस्तान के नजरिये का ताल्लुक है, हिन्दुस्तान न्यूक्लिअर वेपन्स की मुखालिफत

[श्री मोहन स्वरूप]

करता है । मैं नही समझता कि जब हम न्यूक्लियर वेपन्स की मुखालिफत करते है तो बन्दरो को उन का आलाकार क्यो बनाया जाता है तजुर्बात करने के लिये ।

दूसरी चीज मै यह देखता हू कि आज हिन्दुस्तान की हालत यह है कि कई गावो पर पाकिस्तान का कब्जा है । तुकेरग्राम पर पाकिस्तान का कब्जा है, वस्ट बगाल और आसाम के आस पास के सरहदो पर पाकिस्तान की फौजे मौजूद हैं । अभी गोआ के मसले में हम ने देखा कि पोर्चगीज हमारे आदमियो को ले गये । जब इस तरह के मसले सामने आते है तो हम सत्य और अहिंसा की बात करते हैं । हम कहते है कि हम तो अमन से रहना चाहते हैं । दुश्मन हमारे मुल्क पर कब्जा कर ले तो हम अमन की बात करते है, लेकिन जब गरीब बन्दरो की बात आती है, अभी हमारे मिनिस्टर साहब ने कहा कि उन की तादाद बहुत इनसिग्निफिकेट है, जब इस तरह की बात कही जाती है तो सत्य और अहिंसा की पालिसी की बात क्यो की जाती है ? उस के साथ यह मजाक क्यो किया जाता है ? मै कहता हू कि हमारी सरकार सत्य और अहिसा की पालिसी का मखौल उडाना चाहती है तो वह या तो उस चीड को छोड दे या फिर उस का मखौल उडाना बन्द कर दे । वह कह दे कि उस का ईमान इस चीज पर नही है । लेकिन उस का ईमान इस के ऊपर है, तो उस को इस दृष्टिकोण से सोचना होगा । अभी हमारे मिनिस्टर साहब ने कहा कि उस से जो आमदनी होती है वह बहुत ही इनसिग्निफिकेट है । अगर वह इनसिग्निफिकेंट है तो यह कौन सी ऐसी चीज है जिस से होने वाली आमदनी दूसरी चीज से नही हो सकती ? मिनिस्टर साहब ने कहा कि बन्दरो के साथ बडा अच्छा सुलूक किया जाता है । मेरे पास एक कटिंग है उस में यह लिखा है

"The Government according to it, should exercise stricter control at the various stages of export trade in monkeys, so that humane treatment could be effectively ensured to them during their catching, transportation to the port of dispatch and their onward air journey"

यह रिपोर्ट जो सन् १९५७ की है उस में बताया गया है

"The cages, it was alleged, were not of the proper size and did not conform to specification Customs officials spent the whole day measuring them They would not *disclose the result*"

Shri Kanungo: This is about 1957 The regulations have bene changed in July, 1958

श्री मोहन स्वरूप : मै देखता हू कि यह आज भी चल रहा है । जैसी उन के साथ ज्यादती हो रही थी उस वक्त, वही मै आज भी देखता हू । आगे लिखा गया है

"Still another complication was that some of the monkeys were pregnant and one of them delivered at the airport itself"

यह सन् १९५७ की कटिंग है लेकिन जो सूरते हाल सन् १९५७ में थी वही आज भी मै देखता हू । जिन पिंजरो में १०० बन्दरो की जगह है उन में १५० बन्दर भरे जाते है, उन के खाने पीने का कोई इन्तजाम नही होता । यह तो आज उन की हालत है । हम ने एक ऐनिमल वेलफयर बोर्ड बनाया है, उस के चेयरमैन पहले तो श्री वी० के० कृष्ण मेनन थे और अब श्री वी० बी० गाधी है । अभी मै ने एक्सपोर्ट आफ मकीज के मुताल्लिक उस अोपीनियन का इजहार किया है जो कि कमेटी ने पेश की है । हम इस तरह की चीजें तो करते है लेकिन उन का इम्प्लिमेंटेशन सही तौर पर नही करते । मै देखता हूं कि आज भी बहुत सी चिडियां और परिन्दे हिन्दुस्तान से गायब होते जा रहे है । वाइल्ड लाइफ गायब होती जा रही है,

जीवन्त को हम बाहर भेज रहे हैं, वह भी गायब होते जाते हैं और अब हम देखते हैं कि बन्दर भी गायब होते जा रहे हैं क्योंकि आप उन के बच्चे पकड़ कर बाहर भेज देते हैं। मैं देखता हूं कि हमारे यहां से तरह तरह की नस्लें गायब होती जाती हैं। मैं समझता हूं कि हर देश परिन्दों और जानवरों की रक्षा का इन्तजाम करता है, लेकिन हमारे यहां तो नबरिया ही दूसरी है। मेरे इस रेजोल्यूशन को लाने का जो मकसद था वह टू फोल्ड था। एक तो जो ज्यादती या बेरहमी जानवरों के साथ होती है उस बरताव को दूर करने का था और दूसरे यह कि जो हमारा नजरिया सत्य और अहिंसा का है उस को हर तरह से कायम रहना चाहिए। लेकिन मैं देखता हूं कि इस वक्त लोग उसे नहीं रखना चाहते हैं। मैं चाहता हूं कि बन्दरों के ऊपर जो बेरहमी हो रही है उस से उनको बचाया जाय और दूसरे जो फजूल के तजुर्बात के लिए हम बन्दरों का इस्तेमाल करते हैं जो कि नाजायज और बेजा है, उसे रोका जाय। लेकिन मैं देखता हूं कि मिनिस्टर साहब की राय यह है कि इस रेजोल्यूशन को वापस ले लिया जाय। मैं तो इस को प्रेस करना चाहता था लेकिन मेरी पार्टी की तरफ से भी हुक्म हुआ है मैं इस को वापस ले लूं। इस लिए मैं इसे वापस ले रहा हूं। लेकिन फिर भी चाहता हूं कि गवर्नमेंट इस पर तवज्जह दे और इस किस्म के बेरहमाना बर्ताव पर रोक लगाये ताकि बाहर के जो लोग हैं वे हमें शर्मिंदा न करें। मेरे पास टेलिग्राम मौजूद है बहुत से इसके मुताल्लिक। मैं जानता हूं कि गवर्नमेंट की राय इस तरफ नहीं है कि इस को पास किया जाय, फिर भी मैं चाहूंगा कि गवर्नमेंट इस चीज पर तवज्जह दे।

Shri Kanungo: Any breach of regulation which will be reported to us will be looked into seriously, and any change in the regulation will be considered favourably.

उपाध्यक्ष महोदय : आसर साहब क्या कहते हैं अपने मोशन के बारे में ?

Shri Asar: I press my amendment.

Mr. Deputy-Speaker: Then I have to put it to the vote of the House.

Shri Kanungo: But the main resolution has been withdrawn.

Mr. Deputy-Speaker: Even then I have to put the amendment to the vote of the House.

श्री म० ला० द्विवेदी (हमीरपुर) : जबकि प्रस्ताव वापस ले लिया गया है तो अमेंडमेंट कैसे आयेगा ?

उपाध्यक्ष महोदय : अब मुझे यह सोचना है कि रूल्स क्या इजाजत देते हैं। चूंकि रूल्स यह कहते हैं कि सब्स्टिट्यूट रेजोल्यूशन पेश किया जाय इसलिए मुझे करना ही होगा।

श्री भक्त दर्शन : उपाध्यक्ष महोदय, जब पेड़ की जड़ ही नहीं रहेगी तो उस की शाखें कहां रहेंगी ?

उपाध्यक्ष महोदय : अब मैं कोई नया रेजोल्यूशन तो बनाने नहीं लगा। उस पेड़ की जगह एक दूसरा पेड़ भी लगा दिया गया था। पहला तो नहीं रहा लेकिन दूसरा मौजूद है।

The question is:

That for the original Resolution, the following be substituted, namely:—

"This House is of opinion that a Committee comprising of members of Parliament be appointed to examine the question of the export of monkeys from India."

The motion was negatived.

The Resolution was, by leave, withdrawn.